

तर्क्येषु Verz. d. Oxf. H. 249, b, 9. — desid. आरिप्सते P. 8, 4, 55, Sch.;
vgl. आरिप्सु. — intens. sich festhalten, befestigt sein, hängen: ऐषाम्तेषु
रुम्भिणीव राग्ने RV. 1, 168, 8.

— अन्वा von hinten anfassen, — berühren, sich an oder zu Jmd hal-
ten, sich von Jmd nachziehen lassen: विश्वे देवासो अन्वु मा र्भधम् so v. a.
stollet euch auf meine Seite AV. 2, 12, 5. 6, 48, 1. 122, 2. 12, 3, 20. इन्द्रम्
2, 47. fg. अन्वारभ्यां व्यं उत्तरावत् 3, 47. देवता एवान्वारभ्यं सुवर्गं लो-
कमेति TS. 2, 2, 5, 5. 6, 3, 8, 4. ÇAT. Br. 3, 4, 2, 6. 6, 2, 2. ऋविज्ञो यज्ञमानो
ऽन्वारभते 4, 2, 5, 4. 13, 2, 2, 1. अस्ते ऽध्वर्युमन्वारभते ंऽऽऽ. Ça. 1, 3, 25. होतृ-
चमसम् ÇĀṆḠ. Ça. 7, 5, 10. यदि मां संपृषेद्रामः सकृदन्वारभेत वा । धनं
वा यौवराज्यं वा (sc. लभेत) ज्ञोवियमिति मे मतिः ॥ R. 2, 64, 60. अन्वारब्ध
mit pass. Bed. KĀṬṬ. Ça. 8, 1, 2. 8, 28. ंऽऽऽ. Ça. 3, 5, 10. mit act. Bed.:
अन्वारब्धे यज्ञमाने पठ्यां च LĀṬṬ. 1, 3, 1. AIR. Br. 8, 10. एनमन्वारब्धमग्निं
तिष्ठत् ÇAT. Br. 9, 3, 4, 15. 13, 2, 2, 1. KĀṬṬ. Ça. 4, 2, 23. 8, 16. Vgl.
अन्वारभ्य figg. — caus. von hinten anfassen lassen, nach Jmd (loc.)
stellen: ब्रह्मन्नेव त्त्रमन्वारभ्यति TS. 2, 6, 2, 5.

— व्यन्वा (nach verschiedenen Seiten) berühren: तेनो स उभौ व्यन्वा-
रमणा एतीमं चामु च लोकम् AIR. Br. 6, 8.

— समन्वा sich anfassen (von Mehreren gesagt), Etwas gemeinschaft-
lich anfassen AIR. Br. 5, 22. ऋडुम्बरीम् 24. ÇAT. Br. 4, 6, 8, 8. 12, 8, 2,
30. अर्ध्वमुखः समन्वारब्धाः सर्पति ंऽऽऽ. Ça. 8, 13, 23. तं विश्याकर्मणो
समन्वारभते पूर्वप्रज्ञा च ÇAT. Br. 14, 7, 2, 3. ०र्ब्ध sich haltend an ंऽऽऽ.
Ça. 1, 7, 3. 8, 9. 14, 3. 20, 2.

— अन्वा anfassen, berühren, beschreiten; sich an Etwas machen, an-
fangen: तदेव सप्तमेन पदेनाभ्यारभ्य वसति AIR. Br. 5, 10. अवरौषेव तद-
ङ्गा परमकरारभते 6, 5. तान्येव तदभिमर्शतो यत्त्यभ्यारभमाणः 20. ÇAT.
Br. 13, 4, 2, 2. 3. सेतुमभ्यारभत् er begann zu bauen MBH. 3, 10724. —
Vgl. अन्वारम्भ.

— समुपा anfangen, beginnen: विप्रकः समुपारब्धो नहि श्मत्यवि-
प्रकृत् MBH. 5, 8083.

— प्रा 1) anfassen: ता पूजः सुमतिं व्यं वृत्तस्य प्र वयामिव । इन्द्रस्य
चा र्भामहे RV. 6, 57, 5. — 2) anfangen, unternehmen, beginnen: शरी-
रवाक्नोभिर्यत्कर्म प्रारभते नरः BHAG. 18, 15. प्रारभेत हि वियक्तम् Spr.
3694. प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः प्रारभ्य विघ्नविकृता विरमति
मध्याः 1913. तथा प्रारम्भि (impers.) यत् Git. 12, 12. निर्गन्तुं प्रारभे तद्-
कृत् KATHĀS. 7, 46. 11, 63. 13, 127. 18, 106. 338. 37, 13. 124. 42, 104.
निर्गं शिरः । हेतुं प्रारब्धवानस्मि 6, 156. प्रारब्ध 1) mit pass. Bed.: ०क-
र्मन् NILAK. 30. KĀM. NITIS. 11, 37. RAGH. 14, 7. प्रारब्धस्यास्रगमनम् Spr.
97. प्रारब्धमुत्तमज्ञाना न परित्यजति 1913. 5293. MĀRK. P. 133, 21. PAṆ-
ĀT. 200, 21. ed. orn. 85, 23. VER. in LA. (III) 12, 16. तीराब्धिः प्रारब्धो
मथितुं सूरैः KATHĀS. 22, 186. — 2) mit act. Bed.: प्रारब्धा पुरतो यथा म-
नसिज्ञस्याज्ञा तथा वर्तितुम् Spr. 3244. RĀĪA-TAR. 5, 349. — Vgl. प्रार-
ब्धि figg. — desid. partic. प्रारिप्सित was man zu beginnen beabsichtigt
SĀH. D. 1, 4. Verz. d. Oxf. H. 37, b, No. 91. SAṆSK. K. 22, b, 7. SARVADAR-
CANAS. 137, 13. fg.

— प्रत्या s. प्रत्यारम्भ.

— व्या, ०र्ब्ध von verschiedenen Seiten erfasst, — festgehalten: प-
द्वैव क्षेत्रं क्रियते यजुषाधर्षवं सामोद्गीथी व्याख्या त्रयी विद्या भवति

AIR. Br. 5, 33.

— समा sich an Etwas machen, anfangen, unternehmen, beginnen TS.
1, 1, 12, 1. ते नात्मना कर्म समारभते MBH. 3, 10260. R. GORR. 2, 116, 4.
5, 43, 11. MBĀĪH. 48, 7. BHĀG. P. 4, 3, 3. PAṆĀR. 1, 1, 11. Verz. d. Oxf. H.
2, b, 4. BHATT. 12, 45. ततः कर्म समारभेत् M. 7, 59. तेषां निप्रकृतिर्वासा-
न्विधिं तांस्ते समारभन् MBH. 1, 2238. शक्यमर्थं समारभ 3, 10728. 13, 3942.
R. 7, 70, 8. आख्यातुं तत्समारभे R. SCHL. 1, 43, 13. BHĀG. P. 10, 89, 5. PAṆ-
ĀR. 1, 2, 54. अहं विमं जलनिधिं समारप्स्याम्युपायतः ich will mich an
ihn machen so v. a. ich will ihm beizukommen suchen (= आराधयिष्या-
मि NILAK.) MBH. 3, 16298. समारभ्य mit vorangehendem acc. von — an
Verz. d. Oxf. H. 102, b, No. 138. समारब्ध angefangen, unternommen, be-
gonnen: कर्मन् MBH. 13, 343. प्रसाद्य सुतार्थं मे समारब्धम् R. 1, 18, 3.
असमिद्य समारब्धम् 2, 38, 26. अनुतिष्ठेत्समारब्धम् KĀM. NITIS. 11, 57.
नीतयः RAGH. 12, 69. ०नवोटज्ञानि (आश्रममण्डलानि) zu bauen angefan-
gen 13, 22. जिज्ञासा HIT. 20, 13. ed. JOHNS. 1312. समारब्धतर NIDĀNAS.
4, 8 in Ind. St. 10, 93. मम चैतत्समारब्धं पर्वं begonnen, eingetreten R. 3.
42, 14. ततो ऽहं क्षिमवत्पृष्ठे समारब्धो महाव्रतम् ich begann MBH. 2,
428. दग्धं समारब्धाः sie fingen an Feuer anzulegen 1, 3823. — Vgl. स-
मारभ्य, समारम्भ.

— अनुसमा sich an Jmd (acc.) hängen, — reihen TS. 2, 4, 2, 1. TBa.
3, 3, 2, 8. — caus. mod. sich (loc.) Jmd (acc.) anreihen: ता इन्द्रं आत्मसन्नु
समारम्भयत TS. 2, 4, 2, 2.

— उपसमा med. sich in eine Reihe stellen KAUC. 139.

— परि umfangen, umfassen, umarmen: परिरेभिरे पतिम् BHĀG. P. 1,
11, 33. दोर्भ्याम् 4, 9, 43. 10, 38, 36. ०रप्स्यते (so ist zu lesen) 20. SARVADAR-
CANAS. 124, 11. ०रभ्य MBH. 1, 5338. 6288. 4, 514. 813. 6, 5824. R. 2, 96, 23 (103.
22 GORR.). R. GORR. 2, 39, 4. 32, 9. 33, 41. 5, 14, 26. RAGH. 11, 92. KUMĀRAS. 5,
3. Git. 1, 39. 48. 2, 13. ÇIÇ. 9, 72. KATHĀS. 25, 66. 257. 70, 83. BHĀG. P. 10, 71.
27. MĀRK. P. 12, 11. PRAB. 113, 14. Verz. d. Oxf. H. 201, b, No. 483. नाग-
भोगेन मकृता परिभ्य महीमिमाम् MBH. 3, 12558. 13, 6863. ०रब्धुम् R.
4, 22, 19. VIKR. 147. RAGH. 13, 22 (s. d. Corrig.). BHĀG. P. 10, 89, 5. ०र्ब्ध
mit pass. Bed. BHĀG. P. 4, 27, 3. 10, 90, 7. mit act. Bed. R. 2, 96, 23 (vgl.
103, 22 GORR.). Vgl. परिर्म्भ figg. — caus. dass.: ०रम्भित Verz. d. Oxf.
H. 68, b, 33. BHĀG. P. 1, 17, 8. 6, 1, 61. गोविन्द ० so v. a. ganz von ihm in
Beschlag genommen 7, 4, 38. — desid. zu umfangen im Begriff stehen:
परिरिप्समान RAGH. 13, 32, v. l. परीरिप्सते PRAB. 71, 10.

— संपरि zusammen umfangen, — umfassen: परस्परं संपरिभ्य बाहु
भिः R. 6, 74, 42.

— सम् 1) anfassen, packen; zugreifen; sich gegenseitig fassen (zuni
Tanz, Kampf u. s. w.): समिषा र्भेमहि habhaft werden RV. 1, 33, 4. 5.
8, 32, 9. तत्रेणाग्निं स्वेन सं र्भस्व AV. 2, 6, 4. VS. 27, 5. तमयुवः केषिनीः
सं हि र्भेरे RV. 1, 140, 8. 10, 33, 8. संभ्या धीरा स्वसृभिरनर्तितुः 94, 4.
über einen Frass herfallen AV. 11, 10, 8. अग्ने सर्वास्तन्वर्षः सं र्भस्व ziehe
an dich 19, 3, 2. 1, 3. TS. 4, 4, 2, 2. 5, 3, 22, 3. तं देवा कृत्वास्तन्वर्ष्येष्कन्
sich an den Händen haltend 6, 2, 4, 2. ÇAT. Br. 2, 5, 4, 8. यदा वै द्वौ सं-
रभते अथ तौ वीर्यं कुरुतः wenn zwei sich packen 14, 1, 2, 3. 9, 4, 19. यो-
क्ते भृत्याः संरभते zerrren sich um KAUC. 76. र्ब्ध Hand in Hand, eng
verbunden mit: तामिः संर्ब्धमन्वविन्दन् AV. 13, 1, 4. LĀṬṬ. 10, 9, 5. KĀND.